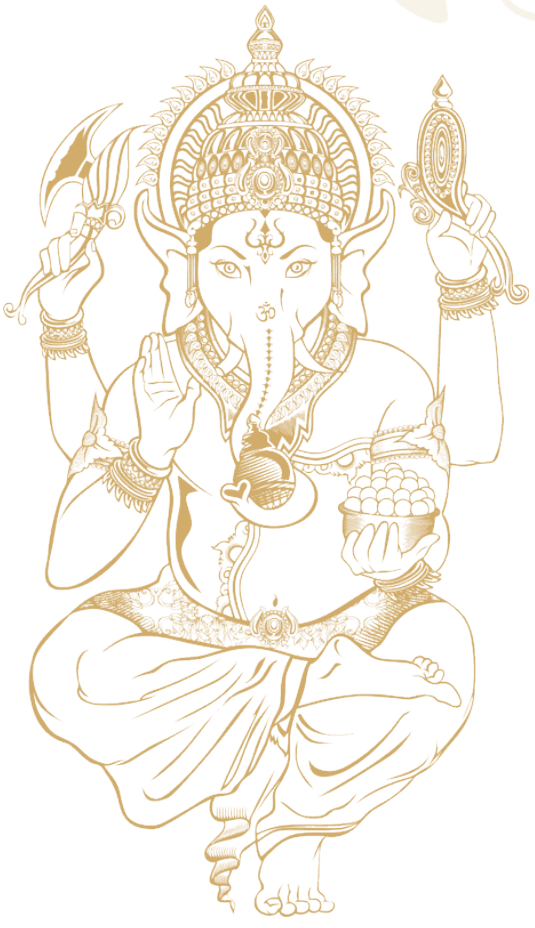

Mahesh

Anjali

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121679101

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121679101 Date: 21/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
22-23/02/1995	जन्म तिथि	12/04/2000
बुध-गुरुवार	दिन	बुधवार
घंटे 00:35:00	जन्म समय	09:00:00 घंटे
घटी 44:01:19	जन्म समय(घटी)	07:22:18 घटी
India	देश	India
Bhiwani	स्थान	Rewari
28:50:00 उत्तर	अक्षांश	28:11:00 उत्तर
76:10:00 पूर्व	रेखांश	76:37:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:25:20	स्थानिक संस्कार	-00:23:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:58:28	सूर्योदय	06:01:49
18:20:25	सूर्यास्त	18:47:13
23:47:33	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:24

वृश्चिक	लग्न	वृष
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
वृश्चिक	राशि	कर्क
मंगल	राशि-स्वामी	चन्द्र
अनुराधा	नक्षत्र	पुष्य
शनि	नक्षत्र स्वामी	शनि
3	चरण	1
व्याघात	योग	धृति
कौलव	करण	बालव
नू-नूर	जन्म नामाक्षर	हू-हुस्नी
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
विप्र	वर्ण	विप्र
कीटक	वश्य	जलचर
मृग	योनि	मेष
देव	गण	देव
मध्य	नाड़ी	मध्य
सर्प	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 4वर्ष 11मा 16दि		02:05:45	वृश्चि	लग्न	वृष	20:04:09	शनि 14वर्ष 9मा 18दि	
शुक्र		09:53:53	कुंभ	सूर्य	मीन	28:40:41	बुध	
09/02/2024		13:11:05	वृश्चि	चंद्र	कर्क	06:16:50	30/01/2015	
09/02/2044		25:00:09	कर्क व	मंगल	मेष	20:45:09	30/01/2032	
शुक्र	10/06/2027	14:02:53	मक	बुध	मीन	04:50:39	बुध	27/06/2017
सूर्य	10/06/2028	19:27:16	वृश्चि	गुरु	मेष	17:52:16	केतु	25/06/2018
चन्द्र	08/02/2030	26:42:55	धनु	शुक्र	मीन	12:46:06	शुक्र	24/04/2021
मंगल	10/04/2031	19:50:20	कुंभ	शनि	मेष	22:57:35	सूर्य	01/03/2022
राहु	10/04/2034	14:02:30	तुला व	राहु व	कर्क	06:04:09	चन्द्र	31/07/2023
गुरु	09/12/2036	14:02:30	मेष व	केतु व	मक	06:04:09	मंगल	28/07/2024
शनि	09/02/2040	04:41:22	मक	हर्ष	मक	26:13:07	राहु	14/02/2027
बुध	10/12/2042	00:41:02	मक	नेप	मक	12:31:37	गुरु	22/05/2029
केतु	09/02/2044	06:47:12	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	18:50:14	शनि	30/01/2032

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:47:33 चित्रपक्षीय अयनांश 23:51:24

लग्न-चलित

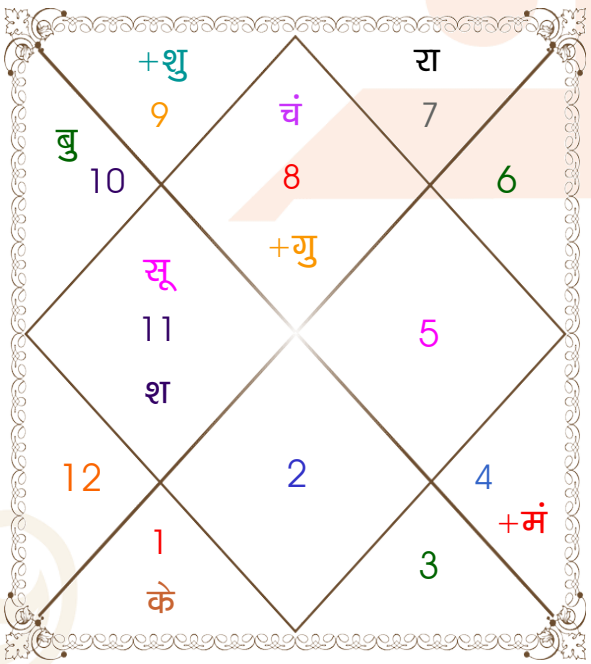

लग्न-चलित

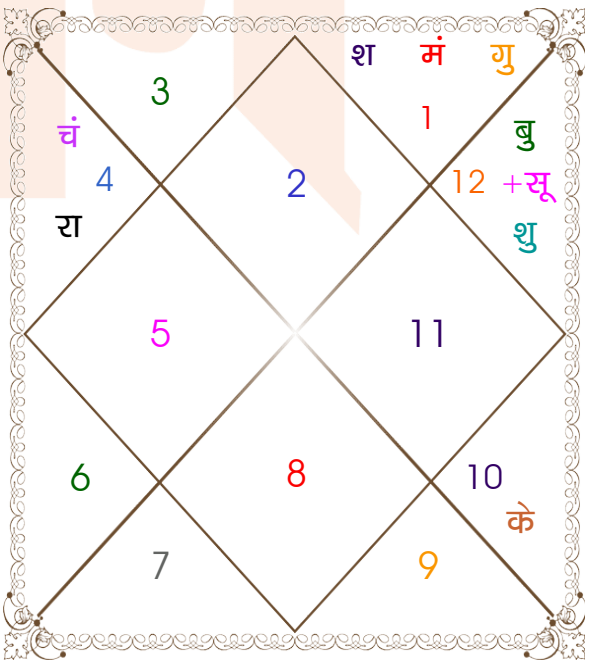

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.00		

कुल : **18 / 36**

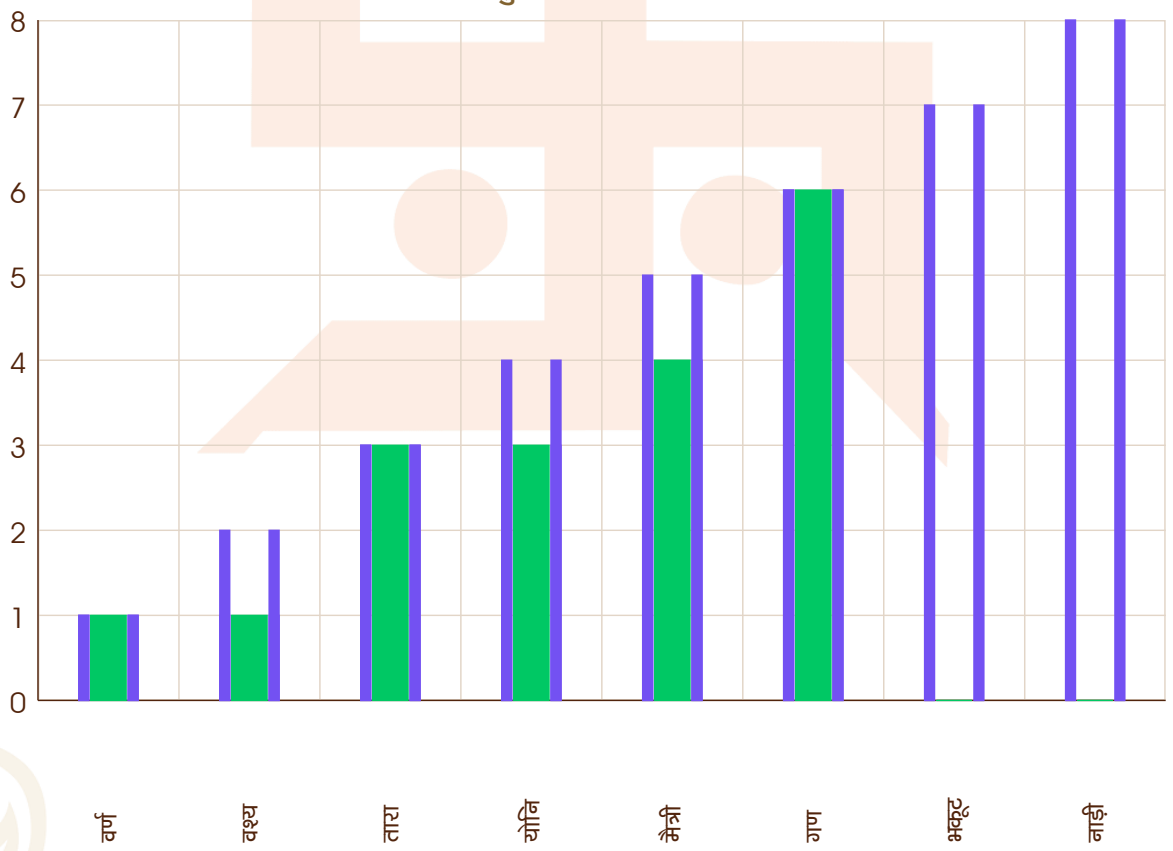

Astro Numerologer "Om Namah Shivay"
Dharuhera, Rewari (HARYANA)
9817787962

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ।दरंसप का नक्षत्र पुष्य है।

डीमेी का वर्ग सर्प है तथा ।दरंसप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डीमेी और ।दरंसप का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

डीमेी मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

।दरंसप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ।दरंसप कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्थ;थ्डम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र।द्धझ क्योंकि मंगल ।दरंसप कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु ।दरंसप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डीमेी कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डीमेी तथा ।दरंसप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डीमेी का वर्ण ब्राह्मण तथा ।दरंसप का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

डीमेी का वश्य कीट है एवं ।दरंसप का वश्य जलचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। जलचर एवं कीट आपस में न तो मित्र होते हैं और न ही शत्रु। अतः कीट डीमेी एवं जलचर ।दरंसप के बीच वैवाहिक संबंध उदासीनता तथा प्रेम एवं सौहार्द का अभाव बना रहेगा। जिसके कारण इनका जीवन नीरस हो सकता है। अधिकांश समय दोनों समझौता करके तालमेल बनाने में व्यतीत करेंगे किंतु डंक मारना कीट का नैसर्गिक स्वभाव होता है अतः डीमेी यदा-कदा अस्वाभाविक व्यवहार कर सकता है जिससे ।दरंसप शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से आहत हो सकती है।

तारा

डीमेी की तारा जन्म तथा ।दरंसप की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

डीमेी की योनि मृग है तथा ।दरंसप की योनि मेष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में

सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डीमेी का राशि स्वामी ।दरंसप के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि ।दरंसप का राशि स्वामी डीमेी के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

डीमेी का गण देव तथा ।दरंसप का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

डीमेी से ।दरंसप की राशि नवम भाव में स्थित है तथा ।दरंसप से डीमेी की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। डीमेी की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

डीमेी की नाड़ी मध्य है तथा ।दरंसप की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में डीमेी एवं ।दरंसप का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

डीमेंी की जन्म राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा ।दरंसप की राशि भी जलतत्व युक्त कर्क है। जलतत्व की परस्पर समानता होने के कारण डीमेंी और ।दरंसप की स्वभावगत विशेषताओं में समानता होगी फलतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा इनका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।

डीमेंी की जन्म राशि का स्वामी मंगल तथा ।दरंसप की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं मित्र राशियों में स्थित हैं। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी। इसके प्रभाव से डीमेंी और ।दरंसप का आपस में प्रेम सहानुभूति तथा समर्पण का भाव होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे इनका वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

डीमेंी और ।दरंसप की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव आएगा तथा आपस में मतभेद तथा विरोध के भाव में वृद्धि होगी। वे एक दूसरे के प्रति अंहकार एवं श्रेष्ठता की भावना भी रखेंगे। इससे संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा अतः सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिए डीमेंी और ।दरंसप को ऐसी प्रवृतियों की उपेक्षा करनी चाहिए।

डीमेंी का वश्य कीट तथा ।दरंसप का वश्य जलचर है। अतः नैसर्गिक रूप से इन दोनों के मध्य मित्रता तथा समता होने के कारण डीमेंी और ।दरंसप की अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान रहेगी। साथ ही दाम्पत्य संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

डीमेंी और ।दरंसप दोनों का वर्ण ब्राह्मण है अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान होंगी तथा शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्य कलापों में दोनों रूचिशील रहेंगे फलतः कार्य क्षेत्र में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

धन

डीमेंी और ।दरंसप दोनों जनम तारा में उत्पन्न हुए हैं। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट सम रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति पर भकूट का शुभ या अशुभ कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन ।दरंसप पर मंगल का अशुभ प्रभाव होगा जिससे यदा कदा वे हानि या व्यय का सामना कर सकती है परन्तु आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

डीमेंी और ।दरंसप दोनों को पैतृक धन या सम्पति की प्राप्ति हो सकती है तथा

धनऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने में भी समर्थ होंगे। लेकिन मंगल के अशुभ प्रभाव से ।दरंसप अनावश्यक व्यय करने में तत्पर रहेंगी जिससे यदा कदा परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अतः ।दरंसप को चाहिए कि ऐसी प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें।

स्वास्थ्य

डीमेी और ।दरंसप दोनों मध्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है अतः नाड़ी दोष से ये प्रभावित होंगे। इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर शारीरिक दुर्बलता का आभास होगा। साथ ही डीमेी के लिए मंगल भी अशुभ रहेगा जिससे वे रक्त या पित संबधी कष्ट प्राप्त करेंगे तथा हृदय संबधी परेशानी भी होगी इसके अतिरिक्त धातु या गुप्त रोगों की संभावना भी हो सकती है। इससे परस्पर संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा अतः मिलान के लिए यत्नपूर्वक इनकी उपेक्षा करनी चाहिए। तथापि शुभ फलों की प्राप्ति के लिए डीमेी को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा तथा मंगलवार का उपवास करना श्रेष्ठ सिद्ध हो सकता है।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डीमेी और ।दरंसप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डीमेी और ।दरंसप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ।दरंसप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ।दरंसप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ।दरंसप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डीमेी और ।दरंसप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डीमेी और ।दरंसप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

।दरंसप के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद ।दरंसप अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य

में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से ।दरंसप पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि ।दरंसप अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

डीमेंी के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में डीमेंी के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण डीमेंी के प्रति सामान्य ही रहेगा।